धियो यो नः प्रचोदयात्

हिन्दी विभाग, डी.ए.वी पी.जी. कॉलेज, वाराणसी

एवं

उत्तर प्रदेश पंजाबी अकादमी, लखनऊ

का संयुक्त आयोजन

दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

'हिन्दी भक्ति कविता और पंजाबी का गुरमति साहित्य : प्रभाव एवं अन्तःसम्बन्ध'

ਹਿੰਦੀ ਭਗਤੀ ਕਵਿਤਾ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਹਿਤ: ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਆਪਸੀ ਸਬੰਧ

-: स्थान :-

स्व. पी. एन. सिंह स्मृति सभागार, डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज, वाराणसी

19-20 मार्च 2024, मंगलवार, पूर्वाह्न 11:00

इस अवसर पर आप सादर आमन्त्रित हैं।

प्रो. सत्यगोपाल जी
प्राचार्य
डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज,
वाराणसी

प्रो. राकेश कुमार राम
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज,
वाराणसी

डॉ. नीलम सिंह
संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी
हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज,
वाराणसी

श्री राजबहादुर
निदेशक
उत्तर प्रदेश पंजाबी अकादमी,
लखनऊ

राष्ट्रीय सहारा
राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण
■ वाराणसी ■ नई दिल्ली ■ पटना ■ कानपुर
वाराणसी
बृहस्पतिवार • 21 मार्च • 2024
12 पृष्ठ, मूल्य ₹ 5.00

गुरुवाणी विविध धर्मों के संतों फकीरों की है सांझी वाणी

डीएवी पीजी कॉलेज में चल रही दो दिवसीय संगोष्ठी संपन्न

वाराणसी (एसएनबी)। भक्ति व्यक्ति के जीवन से प्र… कर मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया है। … के जीवन अधूरा है। उक्त विचार मुख्य … एवं पंजाबी कॉलेज में चल रही दो दिवसीय … कविता और पंजाबी का गुरमति सा… भाव एवं अंत: संबंध विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में गुरुनानक खालसा स्कूल की निर्देशिका जसमीत कौर अहलूवालिया ने समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि कहे। हिन्दी विभाग व उप्र पंजाबी अकादमी, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में जसमीत कौर ने कहा कि गुरु ग्रंथ साहिब सिख धर्म में 11वें गुरु के रूप में स्थापित हैं। उन्होंने यह भी बताया कि सिख धर्म का काशी से गहरा संबंध रहा है, यहीं उदासी के दौरान लगभग 530 वर्ष पूर्व प्रथम गुरु गुरुनानक देव काशी आये, आज उसी स्थान पर गुरुबाग गुरुद्वारा स्थापित है। नौवें गुरु तेग बहादुर सिंह भी 7 महीने 18 दिन तक काशी के नीचीबाग में रह चुके हैं।

इस अवसर पर विशिष्ट वक्ता उप्र पंजाबी अकादमी के जनसंपर्क अधिकारी डॉ. अरविंद नारायण मिश्र ने गुरु ग्रंथ साहिब पर विशेष चर्चा किया। इस दौरान कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के कला संकाय प्रभारी प्रो. मिथिलेश ने किया। अन्य वक्ताओं में पंजाब केंद्रीय पंजाब से बाबा फरीद की भक्ति कविता, शोधार्थी विवेक कुमार तिवारी ने भक्ति कविता और पंजाब, हिंदू कन्या महाविद्यालय, सीतापुर की डॉक्टर पल्लवी मिश्रा ने पंजाब में सूफी कविता एवं डॉ. राकेश पांडे ने गुरु ग्रंथ साहिब में भक्ति कविता के संदर्भ में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राकेश कुमार द्विवेदी, स्वागत प्रो. समीर कुमार पाठक, रिपोर्ट प्रस्तुति डॉ. नीलम सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो. राकेश कुमार राम ने दिया। इस अवसर पर प्रो. सत्यगोपाल यादव, प्रो. मधु सिसोदिया, डॉ. सीमा, डॉ. संजय कुमार सिंह, डॉ. सोमनाथ पाठक, डॉ. अस्मिता तिवारी, डॉ. विश्वमौली समेत अन्य विभागों के प्राध्यापक उपस्थित रहे।

भक्ति कविता और गुरुवाणी समाज को जोड़ने का रास्ता-प्रोफेसर चरणदीप सिंह

धर्म विद्वेष नहीं बल्कि सद्भावना का भाव उत्पन्न करता है। आज सारी दुनिया धर्मों में बंटी है लेकिन भक्ति कविता और गुरुवाणी दोनों सिर्फ और सिर्फ जोड़ती हैं। उक्त विचार संगोष्ठी को डीएवी पीजी कॉलेज में माता साहिब कौर गर्ल्स कॉलेज, बरनाला, पंजाब के प्राचार्य प्रोफेसर चरणदीप सिंह ने हिन्दी विभाग एवं उत्तर प्रदेश पंजाबी अकादमी, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किया। हिन्दी भक्ति कविता और पंजाबी का गुरमति साहित्य : प्रभाव एवं अंत: सम्बन्ध विषय पर बोलते हुए प्रोफेसर चरणदीप सिंह ने कहा कि हिन्दी भक्ति कविताओं में जिस प्रकार कबीर जाति पांति के बंधन को तोड़ते हुए टिकन्ताई पढ़ते हैं, वे मन को परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। ठीक उसी प्रकार गुरुवाणी भी है जिसमें कोई बंधन नहीं है। सिख धर्म में प्रचलित खालसा शब्द भी कबीर की वाणी से आया है। उन्होंने यह भी कहा कि परमात्मा का कोई मजहब नहीं है, वे सभी बंधनों से परे हैं। अंग्रेजों ने मजहब के आधार पर बांटने का कार्य किया। विशिष्ट वक्ता किरोड़ीमल कॉलेज, नयी दिल्ली से आयी प्रोफेसर शोभा

डीएवी में शुरू हुआ दो दिवसीय पंजाबी के गुरमति साहित्य के प्रभाव पर चिंतन

कौर ने कहा कि भारत भक्ति, आध्यात्म और करुणा की भूमि है। १४ वीं शताब्दी में गुरुनानक देव भारतीय संस्कृतियों पर छाये काले

बादलों से चिंतित रहते हैं, जिसके बाद वे समूचे भारत का भ्रमण करते हैं और सबके साथ संवाद स्थापित कर आत्मिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करते हुए समाज को जोड़ते हैं। उन्होंने भक्ति का समान अधिकार प्रदान किया। उन्होंने कहा कि सिख धर्म की गुरु परम्परा राजसत्ता को लोक सत्ता में बदलने का प्रत्यक्ष उदाहरण है। अध्यक्षता करते हुए कार्यकारी प्राचार्य प्रोफेसर सत्यगोपाल ने कहा कि हिन्दी भक्ति कविता हो या पंजाबी गुरमति साहित्य दोनों ही साहित्य एक दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं, इन दोनों साहित्य में भक्तिरस, नम्रता और सौहार्द का भाव है। उन्होंने कहा कि गुरमति साहित्य काफी समृद्ध है और वह जटिल समस्याओं को सुलझाने में भी सक्षम है।

इन्होंने भी रखे विचार : दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में उत्तर प्रदेश पंजाबी अकादमी के जनसम्पर्क अधिकारी डॉक्टर अरविंद नारायण मिश्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मनोज सिंह, डाक्टर अमित कुमार पाण्डेय, डाक्टर गगनप्रीत सिंह, डॉक्टर विंध्याचल यादव ने भी विभिन्न सत्रों में विचार रखे। संचालन प्रोफेसर समीर कुमार पाठक, स्वागत प्रोफेसर राकेश कुमार राम एवं धन्यवाद प्रकाश डॉक्टर नीलम सिंह ने दिया। इस मौके पर प्रोफेसर मिश्रीलाल, डॉक्टर राहुल, डॉक्टर राकेश कुमार द्विवेदी, डॉक्टर अस्मिता तिवारी, डॉक्टर विश्वमौली सहित समस्त विभागों के प्राध्यापक एवं छात्र छात्राएं शामिल रहे।

गुरुवाणी से हुई संगोष्ठी की शुरुआत' : संगोष्ठी का शुभारंभ गुरुनानक खालसा गर्ल्स स्कूल की छात्राओं द्वारा गुरुवाणी की प्रस्तुति से हुई। इस अवसर पर अतिथियों ने माँ सरस्वती एवं गुरु नानकदेव के चित्र पर पुष्पांजलि किया।

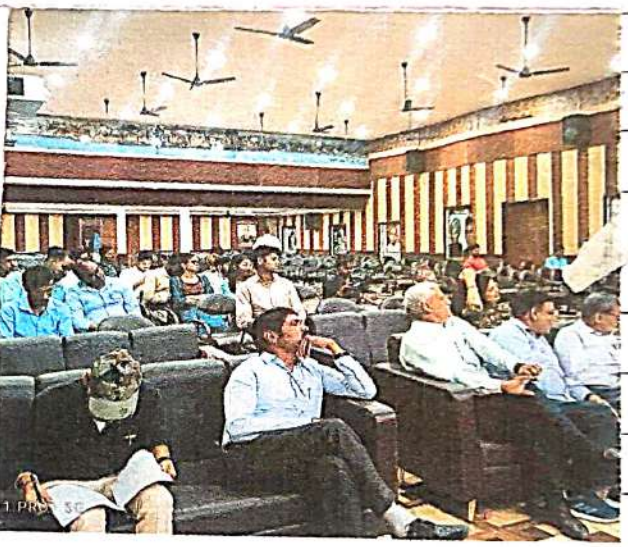

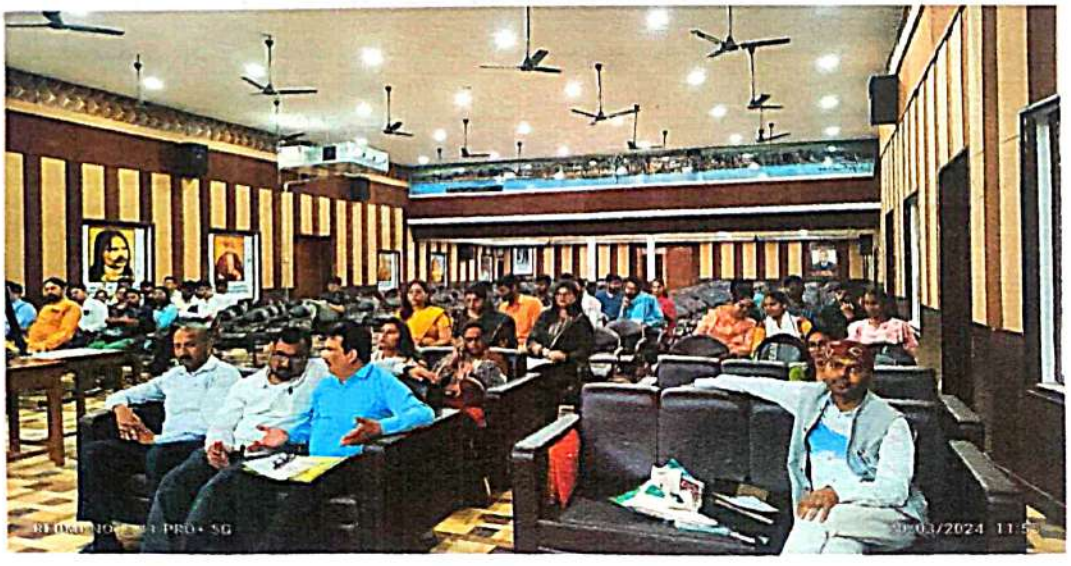

राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी भक्ति कविता और पंजाबी का गुरूमति साहित्य : प्रभाव और अंतःसंबंध

(प्रस्ताव)

संत कविता अखिल भारतीय मानवीय प्रेम और करूण की कविता है। बंगाल से लेकर महाराष्ट्र तक और पंजाब से लेकर सुदूर दक्षिण भारत तक प्रेम और करूणा का स्वर प्रधान है। संत कवियों में फरीद को पंजाबी का आदि कवि कहा जाता है। फरीद की वाणी "आदि ग्रंथ" मे संगृहीत है। गुरूनानक को ही पंजाबी का आदि कवि मानना होगा।

गुरूनानक की रचनाओं में प्रसिद्ध "जपुजी" है इसके अतिरिक्त "आसा दी वार" "सोहिला" और "रहिरास" तथा लगभग 500 फुटकर पद और हैं। भाव और अभिव्यक्ति एवं कला और संगीत की दृष्टि से यह वाणी अत्यन्त सुंदर और प्रभावपूर्ण है। भक्ति में "सिमरन" और जीवन में सेवा नानक की वाणी के दो प्रमुख स्वर हैं। यह स्वर हिन्दी की भक्ति के स्वर से मिलता–जुलता है बल्कि साहित्य प्रवाह एक सा है। गुरूमति साहित्य के अन्तर्गत भक्ति आंदोलन के सूफी और लोक कवि और संत थे। उनकी रचनाएं सिक्खों के आदिग्रंथ में सम्मिलित की गयी है। संत कवियों में जगजीवन दास, बावरी साहिबा, बाबा कीनाराम, पलटूदास, दयाबाई एवं सहजोबाई का नाम प्रमुखतः से प्रसिद्ध है। गुलाल साहब प्रख्यात संत थे। इनका जन्म 17वीं सदी के अंतिम चरण में बसहरी (जिला–गाजीपुर, उ0प्र0) के एक क्षत्रिय जमींदार कुल में हुआ था। इनके गुरू गुल्ला साहब, 'बुलाकी राम कुर्मी' के नाम से इनके परिवार का हल जोतने का काम करते थे। उनके आध्यात्मिक जीवन से प्रभावित होकर गुलाल साहब ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया था और उनके निधन के पश्चात् उनके गद्दी के अधिकारी हुए थे। ये ऊँचे दर्जे के साधक थे। आपने निर्विकल्प मन की समावस्था की दिव्य अनुभूति का वर्णन अनेक रूपों में निरंतर अपनी रचनाओं में किया है। 'ज्ञानगुष्टि' और 'रामसहस्त्रनाम' इनकी वाणियों के संग्रह है। इनकी वाणी 'गुलाल साहब की वाणी' नाम से भी प्रकाशित हुई है। संत बुल्ला साहब, संत यारी साहब के गुरूमुख चेले और संत जगजीवन साहब व संत गुलाल साहब के गुरू थे। यह जाति के कुनबी थे और असल नाम इनका बुलाकीराम था। इन्होंने भुरकुंडा गांव जिला गाजीपुर में अपना सत्संग चालू किया। जहां इनके बाद संत गुलाल साहब और संत भीखादास जी भी सत्संग कराते रहे और अब तक वहां तीनों की समाधि भी मौजूद है। इनके जीवन का समय विक्रम संवत 1750 से 1825 के मध्य है। गुरू रविदास जी मध्यकाल में एक भारतीय संत कवि सतगुरू थे। इन्हें संत शिरोमणि सतगुरू की उपाधि दी गई है। इन्होंने रविदासिया, पंथ की स्थापना की और इनके रचे गए कुछ भजन सिक्ख लोगों के पवित्र ग्रंथ गुरूग्रंथ साहिब में भी शामिल है। इन्होंने जात–पात

क्रमशः...(2)

Scanned with OKEN Scanner

का घोर खंडन किया और आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया। संत भक्तों की रचनाओं का गुरुग्रंथ साहिब में संकलन इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी क्षेत्र के संत भक्त कवि और पंजाबी संत कवियों का स्वर एक सा है। यह सांस्कृतिक एकता की भी दुर्लभ मिसाल है। गुरमति साहित्य के प्रसिद्ध संत कवियों में पलटू साहब की अनेक रचनाएं प्रसिद्ध है। साखियों, कुण्डलियों, रेखतों, झूलनों, अरिल्लों तथा शब्दों की गणना विशेष रूप से की जाती है तथा इनके कतिपय संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। इस तरह हिन्दी भक्ति कविता और पंजाबी के गुरमति साहित्य का अंतःसंबंध अत्यन्त महत्वपूर्ण है और आज के दौर में अत्यन्त प्रासंगिक है।

इस संगोष्ठी का उद्देश्य आज के दौर में प्रेम–सद्भाव–सहिष्णुता की महान परंपरा को स्मरण करने और उससे प्रेरणा लेकर अपनी विरासत को संरक्षित करना है। लाभ–लोभ और अकाल महत्वाकांक्षा के दौर में इन संत भक्त कवियों का स्मरण भावी पीढ़ी के भीतर मूल्यनिष्ठ सामाजिकता और सद्भाव को विकसित करने वाला है और हमारी राष्ट्रीय, सांस्कृतिक थाती है।

इस संगोष्ठी में भक्तिकाल और गुरुमति साहित्य के विशेषज्ञ विद्वानों के विचारों के आलोक में नयी व्याख्या की आशा है। इस अवसर पर गुरुमति साहित्य का पाठ और स्मरण की भी हमारी योजना है। हमें उम्मीद है कि पंजाबी अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में यह संवाद अत्यन्त सार्थक होगा और भविष्य के लिए प्रेरणादायी होगा।

(प्रो. राकेश कुमार राम)
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग